श्री कामेश्वर सिंह (सहायक प्रोफेसर)
राजनीति विज्ञान, सहरसा महिला कॉलेज दासारामपुर
वर्ग - बी०ए० पार्ट - I (प्रतिष्ठा)
पत्र - प्रथम, यूनिट नं० - 01
राजनीति शास्त्र, प्रो० वीरकेश्वर प्रसाद सिंह
दिनांक - 06-07-2020;

Question:→ Define political science and show its Scope.
(राजनीति विज्ञान की परिभाषा दें और इसका क्षेत्र बतावें।)

Ans:→ किसी भी विषय की जानकारी प्राप्त करने के लिए सबसे पहले उसकी परिभाषा जानना अनिवार्य हो जाता है। राजनीति विज्ञान के परिभाषा के बारे में गार्नर ने कहा है कि "राजनीति विज्ञान के जितने लेखक हैं उतनी ही इसकी परिभाषाएँ हैं।" जेलिनेक के अनुसार "राजनीति विज्ञान के अलावा अन्य कोई ऐसा विज्ञान नहीं है जिसे अपने लिए अलग से इतनी अधिक आवश्यकता है।" फिर भी राजनीतिशास्त्र की परिभाषाओं का अध्ययन दो दृष्टिकोणों से किया जा सकता है —
परम्परावादी एवम् आधुनिक दृष्टिकोण :—
पारम्परिक परिभाषाएँ :— राजनीतिशास्त्र की पारम्परिक परिभाषाओं को भी कई श्रेणियों में बाँटा जा सकता है जो —

Scanned with CamScanner

(i) शब्द-व्युत्पत्ति की दृष्टि से :— 'राजनीति-शास्त्र' शब्द अंग्रेजी के Political Science शब्द का हिन्दी रूपान्तर और राजनीति (Politics) शब्द यूनानी भाषा के पोलिस का हिन्दी अनुवाद है, जिसका अर्थ नगर राज्य होता है। प्राचीन यूनान के छोटे-छोटे नगर राज्य के अध्ययन करनेवाले शास्त्र को पालिटिक्स कहा जाता था।

(ii) भारतीय विद्वानों के अनुसार :→ प्राचीनकाल में भारतीय आचार्यों ने राजनीतिशास्त्र को दण्डनीति कहते थे। प्राचीनकाल में दण्ड का अर्थ सजा से नहीं था। जो विधि द्वारा राज्य का शासन और दण्ड का प्रशासन करती है वही दण्ड नीति है। अतः भारतीय शास्त्रों के अनुसार भी राजनीतिशास्त्र राज्यविषयक शास्त्र है।

(iii) आधुनिक विद्वानों के अनुसार :→ आधुनिक युग में राजनीतिशास्त्र की प्रकृति एवं विषय के सम्बन्ध में काफी परिवर्तन हुए हैं। इन परिभाषाओं को ध्यान में रखकर आधुनिक विद्वानों ने विभिन्न परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं जिन्हें तीन वर्गों में रखा जा सकता है—

(क) राज्य के अध्ययन के रूप में —
(ख) सरकार के अध्ययन के रूप में —
(ग) राज्य और सरकार दोनों के अध्ययन के रूप में—

(क) राज्य के अध्ययन के रूप में — आधुनिक विद्वानों ने राजनीतिशास्त्र को केवल राज्य के अध्ययन के रूप में स्वीकार किया है। गार्नर के शब्दों में — "राजनीतिशास्त्र का आरम्भ और अन्त राज्य से होता है।"

लास्की के अनुसार :— "राजनीतिशास्त्र वह विज्ञान है जो राज्य की आधारभूत स्थिति में, उसकी प्रकृति एवं विविध स्वरूप तथा विकास का समझने का प्रयास करता है।"

गैरिस ने कहा है — "राजनीतिशास्त्र एक अतिसम्पन्न संज्ञा के रूप में राज्य के समस्त सम्बन्धों, उसकी उत्पत्ति, परिस्थितियों, उसके लक्ष्यों, नैतिक महत्व एवं आर्थिक समस्याओं आदि का उल्लेख करता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं में केवल राज्य की चर्चा की गयी है, जबकि सरकार के अभाव में राज्य की कल्पना बेमानी असंगत है —

(स) सरकार के अध्ययन के रूप में :— कई के लोग केवल राजनीति शास्त्र को सरकार के अध्ययन के रूप में मानते हैं। इस श्रेणी के लेखकों में प्रमुख नाम लीकॉक और सीले आदि हैं—

लीकॉक के अनुसार → "राजनीति शास्त्र सरकार से सम्बन्धित विज्ञान है।"

सीले के अनुसार → "राज्य विज्ञान शास्त्र सम्बन्धी उसी पर लिए अतिप्रकार विचार करता है जिस प्रकार अर्थशास्त्र प्रतियोगी मनोविज्ञान जीवन एवम् वंशानुगत और तथा देशानुगत लक्षण एवम् परिणाम के सम्बन्ध में।"

उपर्युक्त दोनों परिभाषाओं से एक इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यह परिभाषा भी अधूरा ही है।

(ग) राज्य और सरकार दोनों के रूप में :— इस श्रेणी में गार्नर, गैटिल आदि विचारक आते हैं। गार्नर का कहना है— "राजनीतिशास्त्र समाज शास्त्र का वह अंग है जो राज्य के आधार पर शासन के सिद्धान्तों की विवेचना करता है।"

" आधुनिक परिभाषाएँ :— द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद राजनीति शास्त्र के अध्ययन में एक नई विचारधारा का जन्म हुआ है। इसके साथ ही राजनीतिशास्त्र का अर्थ भी बदल गया है। इसे व्यवहारवादी विचारधारा कहते हैं। इस विचारधारा के अनुसार राजनीतिविज्ञान केवल राज्य और सरकार का ही अध्ययन नहीं करता है बल्कि मानव के व्यवहार का भी अध्ययन करता है। आधुनिक परिभाषाएँ में सबसे अच्छा परिभाषा लासवेल और कापलान की मानी जाती है।

लासवेल और कापलान के शब्दों में— "राजनीति विज्ञान एक अनुभवाश्रयी विज्ञान है तथा इसका मुख्य उद्देश्य शक्ति के निर्धारण एवं शक्ति की सहभागिता का अध्ययन करना है।"

क्रमशः - - - - -

Scanned with CamScanner